डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

सह-संपादक

डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा** –116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय** –121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ० गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** –133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** –137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** –140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** –144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** –153
डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** –170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** –176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** –180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** –185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** –188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** –200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** –211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** –216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** –225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — **भगवानदास मोरवाल** –227

सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — **डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार) — **डॉ. पूनम सिन्हा** –236

प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — **डॉ. पूनम सिन्हा** –243

डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. सुनीता गुप्ता** –258

डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा**, **डॉ. माधव कुमार** –263

अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **विनीता कुमारी** –268

प्रतिवेदन –271

आलेख :

कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय

–डॉ० रेवती रमण

डॉ० गोपाल राय हिन्दी के अब तक के सबसे बड़े कथा-आलोचक हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। कहानी और उपन्यास से संबद्ध उनकी आलोचना-कृतियाँ प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हाथ कंगन को आरसी क्या! इस क्षेत्र में उनकी भूमिका ऐतिहासिक महत्त्व की तो है ही, इससे भी अधिक उल्लेखनीय उनकी आस्था है, लेखन की निरंतरता है जो नित्य नवीन बने रहने की आकांक्षा से युक्त है। उनकी संकल्पधर्मिता सराहनीय है। उन्होंने एक उपेक्षित परती को भारतीय किसान की तरह उर्वर जमीन में रूपांतरित किया और बिना किसी विचलन के पूरे मनोयोग से हिन्दी कथा-आलोचना को अपने स्तर से पूर्णता देने का प्रयास किया।

हिन्दी कथा-आलोचना का क्षेत्र मानो उनके ही इंतजार में था। वैसे, कहने के लिए कोई कह सकता है कि हिन्दी कथा साहित्य पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी विचार किया है, डॉ० रामविलास शर्मा और डॉ० नामवर सिंह ने भी लिखा है। लिखा है, पर प्राय: प्रसंगवश। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी तो स्वयं एक प्रमुख उपन्यासकार थे। डॉ० गोपाल राय के समय में समानान्तर रूप से मधुरेश लिख रहे थे। विजयमोहन सिंह, पुष्पपाल सिंह, शिवप्रसाद सिंह, परमानन्द श्रीवास्तव और मैनेजर पाण्डेय ने भी समय-समय पर यत्किंचित् कथा-आलोचना के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की चेष्टा की है। इस क्षेत्र में वीरेन्द्र यादव भी पिछले दिनों चर्चा का विषय बने किन्तु इनमें से किसी को डॉ० गोपाल राय के समकक्ष नहीं कहा जा सकता।

याद करें तो आचार्य शुक्ल ने 'आधुनिक काल' का एक नाम 'गद्य काल' रखा था। उपन्यास गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं में अपनी सर्जनात्मक उपलब्धियों के बल पर संप्रति सबसे ऊँचे आसन पर विराजमान है। विधागत श्रेष्ठता को लेकर नाटक की चर्चा होती है किन्तु वह काव्य सापेक्ष है। नाटक काव्योत्कर्ष से अनभिज्ञ नहीं समझे जाते। हिन्दी में नाटक की उपलब्धियाँ अपवाद स्वरूप ही गद्यात्मक संरचना के समीप या उसके

पक्ष में झुकी मिलेंगी। नाटक के उपयुक्त मंचन होना चाहिए अथवा मंच के उपयुक्त नाट्य रचना होनी चाहिए। यह प्रश्न आज भी अपनी जगह खड़ा है किन्तु कुल मिलाकर हिन्दी में नाटक की स्थिति दयनीय बनी हुई है।

नाटक के बरअक्स उपन्यास का हिन्दी में जितना और जैसा विकास हुआ है, वह निश्चय ही उत्साहवर्द्धक है। चाहे जिस दृष्टिकोण से विचार करें, स्वीकार करना पड़ेगा कि उपन्यास हिन्दी में संप्रति सबसे सशक्त विधा है। वजह हिन्दी समाज की सांस्कृतिक विपन्नता हो सकती है। हिन्दी उपन्यास ने समाज की सर्वोच्च जीवनचर्या से लेकर सर्वसाधारण के अंधकारपूर्ण वर्जित क्षेत्रों तक को उजागर करने में तत्परता दिखायी है। यानी आधुनिक-बोध से लेकर उत्तर-आधुनिकतावाद तक के सफर में हिन्दी उपन्यास ने एक लम्बी दूरी तय की है। कहानी इस परिप्रेक्ष्य में उसकी सहचरी बनी रह सकी है तो स्वभाववश ही। डॉ० गोपाल राय ने अपनी भावयित्री प्रतिभा के आखेट के लिए कथा-आलोचना का चयन किया तो उनके समकालीनों की प्रतिक्रिया क्या और कैसी हुई होगी—यह केवल अनुमान का विषय नहीं है। मुख्य बात यह है कि कथात्मक गद्य के निरंतर अनुशीलन, विवेचन और विश्लेषण से ऊबकर वह मैदान छोड़कर भागे नहीं। उन्होंने कथा-आलोचना का अन्ततः एक शिखर रच ही दिया। जैसे काव्यालोचना सैद्धांतिक होती है, व्यावहारिक होती है, ऐतिहासिक होती है, वैसे ही डॉ० गोपाल राय ने कथा-आलोचना के इन तीनों क्षेत्रों को इतना समृद्ध तो कर ही दिया है कि वह किसी तरह की हीनता ग्रंथि के हवाले न हो।

ऊपर मैंने शुक्ल जी द्वारा प्रवर्तित 'गद्य काल' का उल्लेख किया है। आधुनिक काल गद्यकाल है, इसमें विवाद भी नहीं है। यह नहीं कि समानान्तर रूप से कविता नहीं लिखी गई है। पिछले युगों के मेल में आज भी कवियों की संख्या अधिक है। उपन्यास लेखक कवियों की तुलना में काफी कम हैं किन्तु उपन्यास के पाठक बहुत हैं। प्रसंगवश, उल्लेखनीय है कि डॉ० गोपाल राय को जिस शोध-प्रबंध के लिए डी० लिट्० की उपाधि मिली थी उसका शीर्षक है—'हिन्दी कथा साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव' (1964)। इससे बिना कहे भी बात स्पष्ट होती है। सवाल यह है कि गद्य में उपन्यास विधा से अधिक प्रभावशाली क्या लिखा जा सकता है? संभव है, कुछ लोग आत्मकथा के पक्ष में बोलें। संभव है, कुछ लोग जीवनी, संस्मरण आदि की चर्चा करें। आलोचना कविता में भी की जाती रही है। कबीर की बड़ी ख्याति है किन्तु ये तमाम विधाएँ उपन्यास विधा की व्यापकता और गहराई को देखते हुए नदी की तेजधारा में बुलबुले जैसी लगेंगी। उपन्यास में सबका समावेश है। वह आंचलिक हो सकता है,

महाकाव्यात्मक हो सकता है। ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, जासूसी, तिलस्मी आदि उसके अनेक प्रकार हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। जिन विशेषज्ञों ने कथा-आलोचना लिखी है, उन्होंने हिन्दी उपन्यास के भेदोपभेदों पर भी गंभीरता से विचार किया ही है।

डॉ० गोपाल राय हिन्दी के कथा-मर्मज्ञों में सर्वोपरि हैं और जाहिर है कि इस क्षेत्र में उन्होंने पर्याप्त से कुछ अधिक ही लिखा है–सुचिन्तित, सुनिर्दिष्ट। वह गद्य के अप्रतिम आलोचक हुए हैं तो इसके लिए उन्हें मशक्कत भी खूब करनी पड़ी है। गद्य सर्जनात्मक होता है, आलोचनात्मक भी। आख्यान-सृजन के परिसर में वह जब प्रवेश करते हैं तो पूरी तैयारी से प्रवेश करते हैं और, वह चीजों को उनके वास्तविक नाम से पुकारने में कला के साथ साहस के भी साथ होते हैं।

उनका अध्ययन व्यापक है। विश्व की तमाम प्रमुख भाषाओं के कथा साहित्य का उन्होंने अध्ययन किया। साथ ही बड़े-बड़े कथा-आलोचकों की कृतियों और विचारों का भी। कथा के क्षेत्र में उन्होंने एक मीमांसक की उपस्थिति को अनिवार्य बना दिया। इस प्रक्रिया में ही हमें उनकी सैद्धांतिकी समझने की आवश्यकता है। उनके सामने तमाम बड़े उपन्यास हैं जिनका उन्होंने अध्ययन किया है। सब जानते हैं कि पहले रचना होती है जिसके आधार पर उसका स्वरूप निर्धारित किया जाता है। पहले लक्ष्य ग्रन्थ होते हैं बाद में लक्षण-निर्धारण होता है। इसलिए किसी को गोपाल राय की कथा-अवधारणा को लेकर संशयग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है। 'उपन्यास की संरचना' को लेकर उनके व्यापक विमर्श में बहुत कुछ ऐसा है जिसपर कम लोगों ने ध्यान दिया है। गोपाल राय हिन्दी के कथा-आलोचक हैं और हिन्दी में प्रेमचंद, रेणु, अज्ञेय, यशपाल आदि बड़े उपन्यासकार के रूप में मान्य हैं तो गोपाल राय जी परंपरा की समझ को आहत नहीं करते। उनका अपना पाठ परिणति तक पहुँचता है, पर निर्णय सुनाने की जल्दी उन्हें नहीं रहती। उनके सामने मौलिक उद्‌भावना की चुनौती है, मान्य आलोचकों के उद्धरणों से ही काम चला लेने की प्रवृत्ति उनमें नहीं है।

उपन्यास की संरचना को प्रस्तुत कृतियों के आधार पर भी स्थिर नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस क्षेत्र में एक कृति की तुलना दूसरी कृति से प्राय: अन्तर समझने के लिए ही की जा सकती है। गोपाल राय ने उपन्यास-समीक्षाओं में महसूस किया कि ललित कलाओं की तुलना में औपन्यासिक संरचना की समस्या जटिल है। वास्तु, मूर्ति, चित्र आदि ललित कलाएँ ठोस, दृश्य और स्थिर रूप में हमारे अवलोकन और परीक्षण का आधार बन सकती हैं। पर उपन्यास या काव्य मात्र के बारे में यह नहीं कहा

जा सकता। हमारे सामने उपन्यास की एक किताब होती है जिसमें [illegible] उपन्यासकार द्वारा प्रदत्त एक अनुभव, संवेदना और चिन्तन का [illegible] कल्पना संसार होता है। इस संसार तक पहुँचने का एकमात्र माध्यम [illegible] शब्द हैं जो उस कल्पनाप्रसूत संसार को पाठक या आलोचक की चेतना में पुनःसृजित करते हैं। इस कथा संसार के धुँधले और छायामय रूप को पकड़ना, उसके द्वारा निर्मित बिम्ब को ग्रहण करना पाठक के लिए ही नहीं प्रबुद्ध आलोचक के लिए भी दुस्साध्य होता है। पुस्तक हमारे सामने स्थिर और गतिहीन वस्तु के रूप में सामने नहीं आती जिससे हम उसके आकार और आकलन का परीक्षण सुविधा के साथ कर सकें।' (उपन्यास की संरचना, पृ. 71)

डॉ० गोपाल राय कथा-आलोचना, खासतौर से उपन्यास की आलोचना की चुनौतियों को न केवल महसूस करते हैं बल्कि उनसे जूझते भी हैं। 'गोदान', 'मैला आँचल', 'शेखर : एक जीवनी' आदि हैं तो हिन्दी के उपन्यास ही किन्तु कथ्य हो या संरचना किसी का किसी से मेल नहीं। इनका शिल्प-विधान भी एक दूसरे से सर्वथा अलग है। इतनी अधिक विभिन्नता और वैविध्य उपन्यास की संरचना को अलग से विचारणीय बनाता है। उपन्यास का मूल्यांकन इसलिए भी अन्य साहित्य-विधाओं की अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण है कि वह जीवन के समीप है। वह जीवन का चित्र है। जीवन समीक्षक के लिए सुपरिचित होता है, उपन्यास में उसका प्रत्यक्षीकरण जिस शैली में हुआ है वह विश्वसनीय है या चकाचौंध करता है, इस पर ही निर्भर होता है उसका सर्जनात्मक मूल्य।

'उपन्यास अन्य विधाओं से अलग है तथापि अन्य कलाकृतियों की तरह उपन्यास में भी रूप, आकल्पन, रचना आदि की तलाश उपेक्षित है।' (उपन्यास की संरचना, पृ.-76) डॉ० गोपाल राय मानते हैं कि उपन्यास का विवेकशील पाठक खुद भी उपन्यासकार होता है। वह एक ऐसी पुस्तक का निर्माता है जो पहले लेखक की चेतना में निर्मित हो चुकी होती है।' अपने उन अनुभवों को शब्दों में बाँधने का उसने जो प्रयास किया है उसमें उसे कितनी सफलता मिली है, यह देखना आलोचक का कार्य है।

डॉ० गोपाल राय ने उपन्यास की आलोचना-प्रक्रिया में उसकी रचना-प्रक्रिया को अधिक तत्परता से रेखांकित किया है। उन्होंने सरल मार्ग नहीं अपनाया है। हिन्दी में आलोचक के रूप में वह जिस मार्ग पर चले हैं, उसका निर्माण भी उन्हें ही करना पड़ा है, अपने ही पैरों से चलकर, बहरहाल।

प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर